ऐक्यम ()

गौतम केवट की एक कहानी

दलों का जंगल

ऐक्यम ()

गौतम केवट की एक कहानी

बहुत समय पहले, जब शहर अभी पहाड़ों तक नहीं पहुँचे थे और न ही सड़कों ने घाटियों को पार कयिा था, तब एक वशिाल वन था, जसिे ग्रीन हेवन के नाम से जाना जाता था।

वह ऐसा स्थान था जहाँ नदयिाँ चाँदी की रबिन-सी चमकती थीं, आसमान को छूते ऊँचे-ऊँचे वृक्ष खड़े रहते थे, और हर कल्पनीय रंग के फूल खलिा करते थे। यह वन अनगनित जीवों का घर था। हर जीव की अपनी वशिेषता, अपनी परंपराएँ और अपना जीवन जीने का अलग तरीका था।

शक्तशिाली हाथी गर्मयिों में प्यासे इलाकों तक पानी पहुँचाते थे। चंचल बंदर एक डाल से दूसरी डाल तक हँसी बखिेरते रहते थे। सुंदर हरिण बीमारों और अकेले पड़े जीवों की देखभाल करते थे। बुद्धमिान बीवर नदयिों और नालों पर पुल बनाते थे, ताकि कोई भी पीछे न रह जाए। पक्षी हर सुबह अपनी मधुर धुनों से सूर्योदय का स्वागत करते थे, जबकि खरगोश हर भोजन से पहले अपने पड़ोसयिों के साथ भोजन बाँटते थे। यहाँ तक कि भेड़िए भी, जन्हिें अक्सर गलत समझा जाता था, रात के सन्नाटे में जंगल की सीमाओं की रक्षा करते थे।

यद्यपि हर जीव अपने-अपने तरीके से सृष्टकिर्ता का सम्मान करता था, फरि भी सभी का वश्विास एक ही था—कि जीवन स्वयं सबसे अनमोल उपहार है। कोई आनंद के गीत गाकर अपनी श्रद्धा व्यक्त करता था, कोई मौन प्रार्थना करता था, तो कोई नए वृक्ष लगाकर, अजनबयिों की सहायता करके या छोटे-बड़ों की सेवा करके अपना आभार प्रकट करता था। उनकी परंपराएँ भले ही अलग थीं, लेकनि उनके हृदय आशा और प्रेम से भरे थे।

ग्रीन हेवन के ठीक मध्य में संसार का सबसे प्राचीन वृक्ष खड़ा था—सौहार्द का वृक्ष। उसकी जड़ें धरती की गहराइयों तक फैली थीं और उसकी शाखाएँ इतनी वशिाल थीं कि उनके नीचे जंगल का हर प्राणी आश्रय पा सकता था। बुज़ुर्ग अक्सर कहा करते थे, "जब तक सौहार्द का वृक्ष अटल खड़ा रहेगा, तब तक यह वन एकजुट रहेगा।"

इस शांत भूमि की देखभाल करता था एरनि, एक बुद्धमिान बूढ़ा उल्लू, जसिके चाँदी जैसे पंख चाँदनी में हल्की चमक बखिेरते थे। हर शाम वह पूरे जंगल के ऊपर उड़ता था। वह केवल यह नहीं देखता था कि जीव क्या कर रहे हैं, बल्कि यह भी समझता था कि वे क्या महसूस कर रहे हैं। उसका वश्विास था कि दयालुता कसिी भी प्राणी के सबसे शक्तशिाली पंख होती है।

एक सुनहरी शाम, जब सूरज पहाड़ों के पीछे ढल रहा था, एरनि ने पूरे ग्रीन हेवन की ओर देखा और मुस्कुरा दयिा।

"अलग-अलग आवाज़ें," उसने धीमे से हवा से कहा, "लेकनि एक ही जंगल। अलग-अलग दलि, लेकनि एक ही घर।"

हवा उसके शब्दों को हर वृक्ष तक ले गई, पर कसिी को यह आभास नहीं था कि एक बड़ी परीक्षा चुपचाप उनकी ओर बढ़ रही है—एक ऐसी परीक्षा, जो यह साबति करेगी कि क्या वे सचमुच स्वयं को एक ही परविार मानते हैं।

उस रात जंगल असंख्य तारों से भरे आकाश के नीचे शांतपूर्वक सो गया, इस बात से पूरी तरह अनजान कि अगली सुबह एक ऐसी कहानी की शुरुआत होने वाली थी, जसिे आने वाली पीढ़ियाँ सदयिों तक याद रखेंगी।

सुबह की पहली करिणें जैसे ही ग्रीन हेवन पर बखिरीं, पूरा जंगल जीवन से भर उठा। हर पत्ते पर ओस की बूँदें मोतयिों की तरह चमक रही थीं, नदी अपनी मधुर कल-कल ध्वनि में गुनगुना रही थी, और सुबह की ठंडी हवा जंगली चमेली की सुगंध को पूरे वन में बखिेर रही थी।

जंगल का हर कोना अपने-अपने अनोखे ढंग से नए दनि का स्वागत कर रहा था।

पक्षी सबसे ऊँची डालयिों पर इकट्ठा होकर मधुर गीत गाने लगे। उनका विश्वास था कि हर नया सूर्योदय उत्सव मनाने योग्य एक अनमोल उपहार है। वहीं पास में, हाथी क्रसि्टल नदी के कनिारे शांत भाव से खड़े थे। अपनी सूँडों को उगते सूरज की ओर उठाकर वे मौन में सृष्टकिर्ता का धन्यवाद करते, और फरि अपने दनि के कार्य में लग जाते।

रंग-बरिंगे फूलों से सजे एक वशिाल मैदान में खरगोश अपने घरों के सामने ताज़े फल और सब्जयिों से भरी टोकरयिाँ रखते थे। पहला कौर खाने से पहले वे उसका एक हसि्सा अपने पड़ोसयिों, यात्रयिों और उन सभी के साथ बाँटते जनिके पास कम होता था। उनके लिए कृतज्ञता का अर्थ था—साझा करना।

कुछ ही दूरी पर, भेड़िए हर संध्या एक चट्टानी पहाड़ी पर चढ़ते थे। तारों से भरे आकाश के नीचे वे कुछ देर मौन बैठकर उस साहस, बुद्धमित्ता और शक्ति पर मनन करते थे जो उन्हें मलिी थी। उन शांत क्षणों में उन्हें यह स्मरण रहता था कि सच्ची शक्ति दूसरों की रक्षा करने में है, उन्हें भयभीत करने में नहीं।

बंदरों का मानना था कि प्रसन्नता जीवन का सबसे बड़ा आशीर्वाद है। वे जहाँ भी जाते, नए पौधे लगाते और अपने बच्चों को सखिाते, "आज लगाया गया हर पेड़, कल कसिी न कसिी को छाया देगा।"

सौहार्द के वृक्ष के पास सुंदर हरिण जंगल की पगडंडयिों को फूलों से सजाते थे। जब भी कोई अजनबी वहाँ आता, वे मुस्कुराकर और खुले दलि से उसका स्वागत करते हुए कहते,

"अतिथि अपने साथ दयालुता दखिाने का एक अवसर लेकर आता है।"

यद्यपि हर परिवार की अपनी परंपराएँ, त्योहार, गीत और रीति-रिवाज थे, फिर भी कोई भी दूसरे के धन्यवाद प्रकट करने के तरीके का उपहास नहीं उड़ाता था। बच्चे बिना यह पूछे कि कौन कहाँ से आया है, साथ खेलते थे। वे तितलियों के पीछे दौड़ते, पहाड़ियों पर चढ़ते और छोटी-छोटी पत्तों की नावें बहते पानी में छोड़ देते। उनके लिए पूरा जंगल सबका था।

एक दोपहर, नन्हे खरगोश चीनू ने ऊपर बैठे उल्लू एरिन की ओर देखकर पूछा,

> "बुद्धिमान एरिन, हम सब सृष्टिकर्ता का धन्यवाद अलग-अलग तरीकों से क्यों करते हैं?"

एरिन ने स्नेह से मुस्कुराते हुए कहा,

> "अपने चारों ओर देखो, चीनू।"

चीनू की नज़र सौहार्द के वृक्ष के चारों ओर खिले फूलों पर गई। वहाँ गुलाब, लिली, ऑर्किड, कमल और डेज़ी—सभी एक साथ खिले हुए थे।

एरिन ने पूछा,

> "क्या तुम्हें लगता है कि यह बगीचा तब और सुंदर होता, यदि हर फूल बिल्कुल एक जैसा होता?"

चीनू ने सिर हिलाया।

> "नहीं," उसने धीरे से कहा। "हर फूल इसलिए सुंदर है, क्योंकि वह दूसरे से अलग है।"

एरिन ने संतोष से सिर हिलाया।

> "ठीक वैसे ही इंसानों... और हर जीव के दिल भी होते हैं। दयालुता अलग-अलग रूपों में खिल सकती है, लेकिन उसकी खुशबू हमेशा एक-सी रहती है।"

चीनू ने उन शब्दों को अपने हृदय में सदा के लिए संजो लिया।

लेकिन हर कोई चीनू की तरह ध्यान से नहीं सुन रहा था।

मैदान के उस पार, कुछ आवाज़ें धीरे-धीरे यह फुसफुसाने लगी थीं कि शायद उनकी अपनी परंपराएँ दूसरों से श्रेष्ठ हैं।

वे फुसफुसाहटें बहुत छोटी थीं...

...लेकिन सबसे विशाल वृक्ष भी कभी एक छोटे-से बीज से ही जन्म लेता है।

अध्याय – 2

जब अहंकार ने जंगल में कदम रखा

ऋतुएँ बदलती रहीं और ग्रीन हेवन पहले की तरह फलता-फूलता रहा। नदियाँ शांत गति से बहती रहीं, वृक्ष और भी ऊँचे होते गए, और पक्षियों के मधुर गीत घाटियों में गूँजते रहे। लेकिन इस सुंदरता के पीछे, जंगल की गहराइयों में कुछ अनदेखा धीरे-धीरे जन्म ले रहा था।

वह न तो कोई काँटेदार बेल थी और न ही कोई विषैला पौधा।

वह था—अहंकार।

एक सुबह, मोर मयूर ने अपने शानदार, रंग-बिरंगे पंख फैलाकर जंगल के नन्हे जीवों की भीड़ से कहा,

> "मेरे पंखों के इन रंगों को देखो। निश्चय ही सृष्टिकर्ता को सुंदरता सबसे अधिक प्रिय होगी। हमारी तरह भव्य उत्सव कोई और नहीं मना सकता।"

कुछ युवा पक्षियों ने सहमति में अपने पंख फड़फड़ाए।

दूसरे दिन, शेर सिंह गौरव शिला पर खड़ा होकर गरजते हुए बोला,

> "सुंदरता अच्छी बात है, लेकिन जंगल की रक्षा साहस करता है। शक्ति के बिना शांति कभी टिक नहीं सकती। इसलिए सबसे महान उपहार तो वीरता ही है।"

उसके समर्थकों ने गर्व से दहाड़ लगाई।

उधर कुछ दूरी पर, खरगोश आपस में धीरे-धीरे बातें कर रहे थे।

चीनू बोला, "गीत और शक्ति दोनों महत्वपूर्ण हैं, लेकिन सबसे बड़ी बात है ज़रूरतमंदों के साथ बाँटना।"

भेड़ियों का मानना था कि अनुशासन और निष्ठा सबसे बड़े गुण हैं।

बंदरों का विश्वास था कि हँसी और आनंद से बढ़कर कोई भी चीज़ दिलों को नहीं जोड़ सकती।

धीरे-धीरे हर समूह दूसरों के गुणों की प्रशंसा करने के बजाय अपने ही गुणों का बखान करने लगा।

समय बीतने के साथ त्योहारों के निमंत्रण कम होने लगे।

मिल-बाँटकर भोजन करने की परंपरा लगभग समाप्त हो गई।

जो बच्चे कभी साथ खेलते थे, वे अब केवल अपने-अपने परिवारों तक सीमित रहने लगे।

सौहार्द के वृक्ष तक जाने वाली पगडंडियाँ पहले से कहीं अधिक सूनी हो गईं।

एरनि यह सब देख रहा था।

एक शाम उसने जंगल के सभी बुज़ुर्गों को उस विशाल वृक्ष के नीचे बुलाया।

उसने शांत स्वर में कहा,

"मेरे मित्रों, क्या तुमने महसूस किया है कि हमारा जंगल कितना बदल गया है?"

सभी बुज़ुर्गों ने चुपचाप अपने सिर झुका लिए।

"हाँ," हाथी गजा ने उत्तर दिया।

हरिणी तारा बोली, "यह सब शब्दों से शुरू हुआ था।"

भेड़िया वीरा ने गंभीर स्वर में कहा, "और अब वही शब्द हमारे बीच दीवारें बनते जा रहे हैं।"

एरनि ने सौहार्द के वृक्ष की ऊँची शाखाओं की ओर देखा और बोला,

"जड़ों को हम धरती के नीचे नहीं देख पाते, लेकिन वे वहीं होती हैं। अहंकार भी ऐसा ही होता है। यदि हम उसे अनदेखा करें, तो उसकी जड़ें इतनी गहरी हो जाती हैं कि वह सबसे मजबूत वृक्ष को भी भीतर से कमज़ोर कर देता है।"

बुज़ुर्ग उसकी चेतावनी को समझ गए, लेकिन उन्हें उम्मीद थी कि समय के साथ मतभेद अपने आप मिट जाएँगे।

वे गलत थे।

जंगल के बहुत ऊपर, दूर पहाड़ों के पार, काले बादल धीरे-धीरे इकट्ठा होने लगे।

हवाएँ पहले से अधिक ठंडी हो गईं।

पक्षी सामान्य से अधिक नीचे उड़ने लगे।

यहाँ तक कि नदी भी बेचैन-सी दिखाई देने लगी।

प्रकृति ग्रीन हेवन को वह सीख देने की तैयारी कर रही थी, जो कोई उपदेश कभी नहीं दे सकता था।

जैसे ही घाटी में पहली बार बादलों की गड़गड़ाहट गूँजी, एरनि ने अपनी आँखें बंद कीं और धीमे स्वर में कहा,

> "काश हर दलि यह याद रखे कि कोई भी तूफ़ान आने से पहले यह नहीं पूछता कि हम क्या मानते हैं।"

सौहार्द के वृक्ष पर बारशि की पहली बूँद गिरी।

फरि दूसरी।

फरि तीसरी।

और उसी क्षण...

महातूफ़ान शुरू हो चुका था।

अध्याय – 3

महातूफ़ान

हल्की-हल्की बरसने वाली वर्षा देखते ही देखते एक भयंकर तूफ़ान में बदल गई।

बादलों की गड़गड़ाहट से पहाड़ काँप उठे। आसमान में बजिली की चमक बार-बार अंधेरे को चीर रही थी। तेज़ हवाएँ सबसे ऊँचे वृक्षों को झुकाने लगीं, और क्रसि्टल नदी अपने कनिारों को तोड़कर उफन पड़ी। शांत और सुंदर ग्रीन हेवन अब भय और अफरा-तफरी का जंगल बन चुका था।

पक्षी अपने घोंसलों को तेज़ हवाओं से बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

खरगोशों के बलि कीचड़ भरे पानी से भर गए।

वशिाल पेड़ों की टूटी शाखाएँ जंगल की पगडंडियों पर गरि पड़ीं, जसिसे अनेक परविार चारों ओर फँस गए।

बीवरों द्वारा बनाए गए पुल उफनती नदी की तेज़ धार में बह गए।

कई वर्षों में पहली बार, जंगल का हर जीव एक ही संकट का सामना कर रहा था।

मोर मयूर ने अपने परविार को बचाने की पूरी कोशशि की, लेकनि तेज़ हवा उसके सुंदर पंखों से कहीं अधकि शक्तशिाली थी।

शेर सहिं ने अपनी पूरी ताकत लगाकर गरिे हुए एक वशिाल वृक्ष को हटाने का प्रयास कयिा, पर वह अकेले उसके बस की बात नहीं थी।

चीनू और बाकी खरगोश एक छोटी-सी पहाड़ी पर समिटकर बैठे थे। वे चारों ओर बढ़ते बाढ़ के पानी को चतिंा से देख रहे थे।

यहाँ तक कअिपने साहस के लिए प्रसद्धि भेड़यिा वीरा भी समझ गया कि केवल बहादुरी से इस तूफ़ान को नहीं रोका जा सकता।

धीरे-धीरे पूरा ग्रीन हेवन भय से भर गया।

कुछ जीव रो रहे थे।

कुछ मौन प्रार्थना कर रहे थे।

कुछ अपने बछिड़े हुए प्रयिजनों को व्याकुल होकर खोज रहे थे।

ऊँचे आकाश में, मूसलाधार वर्षा के बीच एरनि उड़ रहा था। उसके पंख पूरी तरह भीग चुके थे, लेकनि उसकी आवाज़ अब भी शांत और दृढ़ थी।

"मेरी बात सुनो!" उसने ऊँची आवाज़ में पुकारा।

डरे हुए सभी जीव उसकी ओर देखने लगे।

"यह तूफ़ान हमारे मतभेदों की परवाह नहीं करता। इसकी नज़र में हम सब सर्फ़ि एक ही जंगल हैं।"

उसके शब्द पूरी घाटी में गूँज उठे।

कुछ क्षणों के लिए बारशि की आवाज़ के अलावा सब कुछ शांत हो गया।

तभी हाथी गजा आगे बढ़ा।

उसने कहा,

"मैं इस तूफ़ान को रोक नहीं सकता... लेकनि मैं कसिी की मदद ज़रूर कर सकता हूँ।"

अपनी अपार शक्ति से उसने रास्तों में गरि वशिाल वृक्षों को हटाना शुरू कर दयिा।

उसे देखकर बंदर तुरंत सबसे ऊँचे पेड़ों पर चढ़ गए और उन नन्हे पक्षयिों को बचाने लगे जनिके घोंसले तूफ़ान में उजड़ चुके थे।

भेड़एि तेज़ बहते पानी को पार कर डरे हुए खरगोशों को सुरक्षति ऊँची जगहों तक पहुँचाने लगे।

हरिण घायल जीवों की देखभाल करने लगे, जबकि बीवर छोटे-छोटे अस्थायी पुल बनाने में जुट गए, ताकि परविार सुरक्षति स्थानों तक पहुँच सकें।

पक्षी पूरे जंगल के ऊपर उड़-उड़कर उन जीवों को खोजने लगे जो अब भी कहीं फँसे हुए थे, और बचाव दल को उनका रास्ता दखिाने लगे।

कुछ ही समय में जंगल का हर जीव कसिी न कसिी दूसरे जीव की सहायता कर रहा था।

अब कसिी ने यह नहीं पूछा,

"तुम कसि परंपरा को मानते हो?"

कसिी ने यह भी नहीं पूछा,

"तुम किसि समूह से हो?"

हर ओर बस एक ही प्रश्न सुनाई दे रहा था—

"अब भी किसि हमारी मदद की ज़रूरत है?"

पूरी रात पंजे, पंख, सूँड, नाखून और सबसे बढ़कर—दलि—एक साथ मलिकर काम करते रहे।

धीरे-धीरे भोर की पहली रोशनी ग्रीन हेवन पर फैलने लगी।

आख़रिकार बारशि थम गई।

तूफ़ान अपने पीछे टूटे हुए वृक्ष, उजड़े हुए घर और कीचड़ से भरी पगडंडियाँ छोड़ गया था।

लेकनि वह अपने साथ एक ऐसी सच्चाई भी सामने लाया, जो स्वयं उस तूफ़ान से कहीं अधकि शक्तशिाली थी—

वह साहस, जो तब जन्म लेता है जब दयालुता सबके साथ बाँटी जाती है।

सौहार्द के वृक्ष की भीगी हुई शाखाओं के नीचे खड़े एरनि के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान उभर आई।

उसने धीमे स्वर में कहा,

"हमारे जंगल ने आज पहला कदम उठा लयिा है...

लेकनि सबसे बड़ी सीख अभी मलिनी बाकी है।"

क्रमशः...

...